त्रिलोचन पोखरेल: भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सिक्किम की सीमांत कथा

मूल लेख: **बिनोद भट्टराई एवं राजेन उपाध्याय**
अनुवादक: **मणि मोहन**

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के लोकप्रिय इतिहास में बड़े पैमाने पर आख्यानों में व्यक्तियों को महिमामंडित किया गया है। महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस और शहीद भगत सिंह जैसे महान स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में प्रत्येक भारतीय जानता है, परन्तु उत्तर पूर्व भारत के स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में जनमानस को बहुत कम जानकारी है। पूर्वोत्तर भारत में बहुत से लोगों ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया और उन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। समय बीतने के साथ, हमारे स्वतंत्रता संग्राम के कई नायकों को उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के बावज़ूद अतीत में कहीं हाशिए पर समेट दिया गया और कहीं उनके संघर्षो को भुला दिया गया। ऐसे ही भूले-बिसरे अग्रदूतों में से एक, सिक्किम की माटी के पुत्र स्मृति शेष त्रिलोचन पोखरेल हैं, जिन्हें 'गांधी पोखरेल' के नाम से भी जाना जाता है।

भारत ने 1947 में ब्रिटिश साम्राज्य से स्वतंत्रता प्राप्त की, लेकिन इस संघर्ष में, इसने कई पुरुषों और महिलाओं को खो दिया, जिन्होंने अपने अदम्य साहस और देशभक्ति के साथ अत्याचारी औपनिवेशिक शासक से आजादी के लिए लड़ाई लड़ी। आज, इन पुरुषों और महिलाओं को स्वतंत्रता सेनानियों के रूप में संबोधित किया जाता है, जिन्होंने अपनी मातृभूमि के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। समय बीतने के साथ, हमारे स्वतंत्रता संग्राम के कई नायकों को हाशिए पर ला खड़ा किया और विदेशी प्रभुत्व से मुक्ति के लिए हमारे संघर्ष में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के बावजूद उन्हें शायद ही जाना जाता है। वे अन्य समाज सुधारकों और उनके आदर्शों की तरह ही विस्मृत अध्याय बन कर रह गए। ऐसे ही भूले-बिसरे अग्रदूतों में से एक सिक्किम की धरती के सपूत हैं- त्रिलोचन पोखरेल।

स्मृति शेष पोखरेल का जन्म स्वर्गीय भद्रलाल पोखरेल और श्रीमती जानुका के यहाँ 19 वीं शताब्दी के अंतिम दशक में पूर्वी सिक्किम के पाक्योंग उपखंड में तारेथाङ बस्ती में हुआ था। अपनी युवावस्था के दौरान, वे महात्मा गांधी द्वारा शुरू किए गए आंदोलनों से बहुत प्रभावित थे, जो सत्य और अहिंसा के मूल सिद्धांतों पर आधारित था। जबकि हमें महात्मा गांधी के पहले के आंदोलनों, जैसे असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन में उनकी भागीदारी के बारे में अधिक जानकारी नहीं है, फिर भी हम भारत छोड़ो आंदोलन (1942) में उनके समकालीनों के दावों के आधार पर उनकी भागीदारी सुनिश्चित कर सकते हैं। उनके समय के लोगों ने हमें उनके गुजरात के साबरमती आश्रम और बिहार के सर्वोदय आश्रम में गांधीजी के साथ रहने के बारे में बताया। अपने प्रवास के दौरान, श्री पोखरेल ने अपना समय चरखा कताई और आश्रमों के लिए अपनी सेवाएं प्रदान करने और अनेक दैनिक मामलों में महात्मा की सहायता करने में बिताया। श्री पोखरेल को महात्मा गांधी के नेतृत्व वाले सरल जीवन की शिक्षाओं में अत्यधिक विश्वास था। यह माना

जाता है कि स्वर्गीय पोखरेल गांधीजी की शिक्षाओं और उनकी जीवन शैली से अत्यधिक प्रभावित थे। तारेथाङ गांव में उनके चिर परिचितों ने हमें बताया कि वह अपने पैतृक गांव में फकीर गांधी के समान कपड़े पहनकर आते थे।[1] अंबा ग्राम पंचायत इकाई के दधीराम धमाला ने बताया है कि पोखरेल अपने घर में ज्यादा देर तक नहीं रहता थे। उन्होंने त्रिलोचन पोखरेल से मुलाकात का दावा किया। एक कहानी में, उन्होंने सिक्किम के किसानों के बीच महात्मा गांधी की स्वदेशी की अवधारणा के प्रचार में अपनी भागीदारी के बारे में भी बताया है। धमाला ने हमें बांदे पोखरेल की गतिविधियों के बारे में बताया कि अपने ख़ाली समय में स्थानीय हाट-बाजार (जैसे रोंगली, रेनॉक, पाक्योंग, रंगपो आदि) जगहों पर वे जाया करते थे और सूती धागा बनाने के लिए अपने चरखे के साथ एक तरफ बैठ रहते थे।

गांधीजी के समान, वे भी सूती धोती और खड़ाऊ (लकड़ी की भारतीय चप्पल) की एक जोड़ी पहनते थे। इस तरह उन्होंने 'गांधी पोखरेल' उपनाम अर्जित किया। कहा जाता है कि वह गांव में बड़ों का 'वंदे मातरम' कहकर अभिवादन करते थे। इससे उनके गांव के कुछ लोग उन्हें 'बंदे पोखरेल' कहने लगे। वे वन्दे मातरम का संदेश देते और स्वदेशी आंदोलन की भावना पैदा करते थे यानी कि कताई और स्वदेशी कपड़े पहनना, खादी और ग्रामोद्योग आदि स्थापित करना ताकि गांवों का विकास हो और गरीबों के लिए आमदनी पैदा हो सके।

स्वर्गीय पोखरेल सिक्किम के प्रथम स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने ब्रिटिश आधिपत्य के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। दरअसल, सिक्किम अंग्रेजों का संरक्षित राज्य था। वर्ष 1861 में तुमलोंग की संधि पर हस्ताक्षर के साथ सिक्किम को प्रभावी रूप से ब्रिटिश भारत का वास्तविक संरक्षित राज्य बना दिया गया।[2] भारत की ब्रिटिश सरकार आमतौर पर भारतीय साम्राज्य के उत्तरी किनारे पर स्थित बफर राज्यों को प्राथमिकता देती थी। उन्नीसवीं शताब्दी के बाद के दशकों में तिब्बत के मार्ग को खोलने के प्रयासों के इर्द-गिर्द केंद्रित परिस्थितियों के एक अनूठे संयोजन ने अंततः अंग्रेजों को सिक्किम पर एक औपचारिक संरक्षक स्थापित करने के लिए प्रेरित किया, जिसे बाद में चीन ने 1890 की एंग्लो-चीनी संधि में मान्यता दी। इसका सिक्किम की संप्रभुता पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। ब्रिटिश भारत ने सिक्किम की रक्षा और क्षेत्रीय अखंडता की जिम्मेदारी संभाली, और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सिक्किम के भीतर कहीं भी ब्रिटिश भारतीय सशस्त्र बलों को तैनात करने सहित भारत की सुरक्षा के लिए इस तरह के उपाय करने का अधिकार दिया गया था। एक अन्य प्रावधान यह निर्धारित करता है कि सिक्किम के बाहरी मामलों का संचालन और विनियमन पूरी तरह से ब्रिटिश भारत सरकार द्वारा किया जाएगा, और सिक्किम का किसी भी विदेशी शक्ति के साथ कोई व्यवहार नहीं होगा। विदेश यात्रा करने वाले सिक्किमी नागरिकों को भारतीय संरक्षित व्यक्तियों का दर्जा प्राप्त होगा और वे समान सुरक्षा और सुविधाओं के हकदार होंगे और भारतीय नागरिकों के समान कठोर विदेशी मुद्रा प्रतिबंधों के अधीन होंगे।[3] सन् 1888 में जेसी व्हाइट से सिक्किम में राजनीतिक अधिकारियों की नियुक्ति के बाद, अंग्रेजों ने सिक्किम में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डाला और त्रिलोचन पोखरेल को मुख्यधारा के भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित किया ।

स्वर्गीय पोखरेल के योगदान को मान्यता देते हुए सिक्किम सरकार ने 16 मई, 2018 को चिंतन भवन में 43 वें राज्य दिवस समारोह के दौरान स्वर्गीय पोखरेल के योगदान को दृष्टिगत रखते हुए उन्हें एल. डी. काजी पुरस्कार प्रदान किया। इस पुरस्कार में दिवंगत पोखरेल की पोती को एक प्रशस्ति पत्र और एक लाख रुपये का चेक दिया गया। एल.डी. काजी सिक्किम के पहले मुख्यमंत्री हैं, जिन्हें सिक्किम में लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना के लिए जाना जाता है।

2021 में, हिमालय पर्वतारोहण संस्थान (HMI), दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल ने 21 से 30 अप्रैल तक सिक्किम हिमालय की चार चोटियों पर क्लाइंब-ए-थॉन अभियान का आयोजन किया। अभियान के हिस्से के रूप में, जो भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों को समर्पित है, टीम ने समुद्र तल से 16,500 फीट की ऊंचाई पर माउंट रेनॉक में 7,500 वर्ग फुट और 75 किलोग्राम वजन का राष्ट्रीय ध्वज फहराया। जिस स्थान पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया था उसका नाम सिक्किम के पहले स्वतंत्रता सेनानी त्रिलोचन पोखरेल के नाम पर रखा गया है, जिसे गांधी पोखरेल के नाम से याद किया जाता है। बड़े आकार के राष्ट्रीय ध्वज को फहराने के पीछे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और भारतीय हिमालय की विरासत और बड़े मकसद को बढ़ावा देना है। ध्वजारोहण बिंदु को भारतीय पर्वतारोहण समुदाय के बीच स्वर्गीय पोखरेल की स्मृति में 'त्रिलोचन पोखरेल पॉइंट' के रूप में जाना जाता है और छोटे पर्वतारोहण और ट्रेकिंग अभियान के लिए सिक्किम हिमालय में छोटी चोटियों को बढ़ावा देने का प्रयास किया जाता है। यह उपलब्धि एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स और इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में किसी पहाड़ पर फहराए गए सबसे बड़े भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के रूप में दर्ज की गई।

भारतीय डाक विभाग एवं संचार मंत्रालय ने स्वर्गीय त्रिलोचन पोखरेल पर विशेष कवर जारी किया। "आज़ादी का अमृत महोत्सव" और राष्ट्रीय डाक सप्ताह, 2021 के राष्ट्रव्यापी उत्सव के एक भाग के रूप में, डाक विभाग, सिक्किम पोस्टल डिवीजन ने एक विशिष्ट कवर जारी किया जिसमें एक गुमनाम नायक और भूले हुए अग्रणी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी को दर्शाया गया है।

त्रिलोचन पोखरेल के महती योगदान को मान्यता देते हुए 30 जनवरी, 2019 को सिक्किम सरकार के सड़क और पुल विभाग ने पाक्योंग, तारेथांग और रोरेथांग रोड का नाम बदलकर 'बंदे पोखरेल मार्ग' करने की मंजूरी दी। इसी क्रम में पोखरेल की स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए एक व्यू पॉइंट को वहाँ के ग्रामीण जन द्वारा अपने स्वतंत्रता सेनानी के नाम पर वन्दे व्यू पॉइंट का निर्माण किया गया।

18 फरवरी, 2021 को सिक्किम सरकार के कानून विभाग ने पाक्योंग जिले के तारीथांग तकचांग क्षेत्र में संग्रहालय के साथ-साथ पर्यटन विकास के लिए शोध के लिए काम करने के लिए वन्दे पोखरेल स्मारक एवं ग्रामीण पर्यटन विकास समिति को मान्यता प्रदान की। पोखरेल की उपलब्धियों और योगदान की मान्यता और स्वीकृति ने उन्हें सिक्किम का पहला स्वतंत्रता सेनानी बनाकर सिक्किम के इतिहास का गौरव बढ़ाया है।

स्वर्गीय पोखरेल को जानने वाले कुछ विद्वानों ने हमें बताया कि 1957 में पंडित जवाहरलाल नेहरू की सिक्किम यात्रा के दौरान वे अपने मूल स्थान पर आए थे और करिश्माई भारतीय प्रधानमंत्री के बारे में खूब बातें की थीं। शायद यह अपनी जन्मभूमि की उनकी अंतिम यात्रा थी और संभवत: वे अकेले सिक्किमी हैं, जिन्होंने स्वतंत्रता के लिए भारतीय संघर्ष में भाग लिया। उनके वंशजों के बारे में पूछताछ करने पर हमें बताया गया कि उनके परिवार के सभी सदस्य बहुत पहले असम चले गए थे। कपुरपाते गांव के तारा प्रसाद भट्टराई ने उल्लेख किया कि स्वर्गीय पोखरेल ने अपनी जमीन उनके पिता को बेच दी थी और अभी भी ताक्चाङ (कपुरपाते) गांव में जमीन का एक टुकड़ा है, जहां कभी वन्दे पोखरेल रहते थे। ताक्चाङ (कपुरपाते) गाँव के लोग इस भूमि को पोखरेल बारी (पोखरेल की भूमि) कहते हैं। अपनी बातचीत में श्री भट्टराई ने हमें पोखरेल जी की आखिरी तस्वीर और एक लिफाफा दिखाया, जो 47 साल पहले उनके परिवार के सदस्यों को मिला था। यह लिफाफा बिहार के पूर्णिया जिले से पोस्ट किया गया था, जिसमें सिक्किम के इस गांधीवादी की मृत्यु की पुष्टि थी जो इस प्रकार है: "27-1-69 को प्राकृतिक चिकित्सालय, रानीपात्रा, पोस्ट ऑफिस रानीपात्रा, जिला पूर्णिया, बिहार में प्रातः 9 बजे उनकी मृत्यु हुई।"

संदर्भ ग्रंथ सूची-

[1]Bhattarai, B. (2018). State Day and Remembering Gandhi Pokhrel of Sikkim. Sikkim Express. Retrieved from http://www.sikkimexpress.com/NewsDetails?ContentID=10349

[2]McKay, A. (2003). 19th century British Expansion on the Indo-Tibetan Frontier: A Forward Perspective. The Tibet Journal, 28(4), 61–76. Retrieved from http://www.jstor.org/stable/43302542

[3]Rose, L. E. (1969). India and Sikkim: Redefining the Relationship. Pacific Affairs, 42(1), 32–46. https://doi.org/10.2307/2754861

*(**लेखकीय परिचय:** यह लेख मूलतः अंग्रेजी भाषा में डॉ. बिनोद भट्टराई एवं डॉ. राजेन उपाध्याय द्वारा लिखा गया है। डॉ. बिनोद भट्टराई सिक्किम विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग में सहायक प्रोफेसर पद पर कार्यरत हैं एवं डॉ. राजेन उपाध्याय नर बहादुर भंडारी डिग्री कॉलेज, तादोंग के इतिहास विभाग में बतौर सहायक प्रोफेसर संबद्ध हैं। इस लेख का हिंदी अनुवाद चर्चित कवि एवं अनुवादक डॉ. मणि मोहन द्वारा किया गया है, जो कि वर्तमान में भोपाल, मध्यप्रदेश में रहते हैं।)*